प्रसिद्ध हिंदी चलचित्र “बैजू–बावरा” के गीतों में निहित रस एवं रस भाव

डॉ. ठाकुर सिंह
Panjab University, Sector 14,
Chandigarh-160014

Abstract

बैजू बावरा हिन्दी चलचित्र जगत का एक प्रसिद्ध एवं उत्कृष्ट चलचित्र है। यह प्रसिद्ध संगीतज्ञ बैजू बावरा के जीवन पर आधारित है। इस चलचित्र में प्रस्तुत किया गया है कि बैजू बावरा, तानसेन से अपनी पिता की मृत्यु का बदला लेना चाहता है। तानसेन, बादशाह अकबर के दरबार में नियुक्त एक दरबारी गायक थे। बादशाह ने अपने राज्य में तानसेन के अतिरिक्त अन्य किसी भी गायक के गायन पर पूर्णतः पाबंदी लगाई हुई थी। बैजू बावरा के पिता को इसका उल्लंघन करते हुए मृत्यु दंड प्राप्त हुआ था जिसका बदला लेते हुए बैजू ने तानसेन को अपनी संगीत प्रतिभा द्वारा पराजित किया तथा तानसेन को मृत्यु–दंड नहीं अपितु जीवन–दान देकर अपने विशाल हृदय का परिचय दिया। इसके अतिरिक्त चलचित्र में बैजू बावरा के निजी जीवन संबंधी भी अनेक घटनाओं का उल्लेख किया गया है। इस चलचित्र का संगीत निर्देशन ‘नौशाद’ जी द्वारा किया गया। उन्होंने इसके गीतों को पूर्णतः रागों पर आश्रित करते हुए निर्मित किया। नौशाद जी ने इस चलचित्र में गायक–गायिकाओं के तौर पर उस्ताद अमीर खां, पं. डी.वी. प्लुष्कर, मुहम्मद रफ़ी, शमशाद बेगम तथा लता मंगेशकर जी के गायन को सम्मिलित किया। इस चलचित्र के गीतों की सूची, उनमें राग एवं रस–भाव इत्यादि का वर्णन प्रस्तुत शोध–पत्र के माध्यम से आगे किया जा रहा है।

प्रसिद्ध हिन्दी चलचित्र ‘‘बैजू बावरा’’ के गीतों में निहित

राग एवं रस–भाव

भूमिका

बैजू बावरा हिन्दी सिनेमा जगत का एक प्रसिद्ध चलचित्र है। इसे सन् 1952

ई. में हिन्दी चलचित्र निर्देशक 'विजय भट्ट' के निर्देशन अधीन प्रदर्शित किया गया। इस चलचित्र के निर्माता प्रकाश पिक्चर्स हैं। इस चलचित्र के संगीत निर्देशक ''नौशाद'' जी हैं। इस चलचित्र के मुख्य अभिनेताओं के रूप में भारत–भूषण तथा मीना कुमारी जी ने नायक–नायिका की भूमिका अदा की है।[1]

कहानी

बैजूबावरा चलचित्र प्रसिद्ध संगीतज्ञ बैजू बावरा के जीवन पर आधारित है। इस चलचित्र की कहानी का काल बादशाह अकबर के समय का है। इस चलचित्र में प्रस्तुत किया गया है। कि बैजू बावरा, बादशाह अकबर के राज–दरबार में नियुक्त प्रसिद्ध संगीत सम्राट तानसेन से अपने पिता की मृत्यु का बदला लेना चाहता है। तानसेन, बादशाह अकबर के दरबार के नवरत्नों में से एक था। इसलिए बादशाह का यह आदेश था कि उसने राज्य में तानसेन के अतिरिक्त अन्य कोई भी गा नहीं सकता। अगर कोई ऐसा करेगा तो उसे तानसेन के साथ संगीत प्रतियोगिता करनी पड़ेगी। इसके फलस्वरूप अगर वह तानसेन से पराजित हुआ तो उसे मृत्यु–दंड स्वीकार करना पड़ेगा। इसी कारणवश ही बैजू के पिता जी की मृत्यु हुई थी। मृत्यु से पहले बैजू के पिता ने उससे यह वचन लिया था कि बैजू उनकी मृत्यु का बदला अवश्य ग्रहण करेगा।[2] इसी भावना के तहत बैजू, संगीत मनीषि स्वामी हरिदास जी से संगीत की शिक्षा ग्रहण करता है तथा अंत में तानसेन को अपनी संगीत प्रतिभा द्वारा पराजित करके अपने पिता की मृत्यु का बदला लेता है। साथ ही वह तानसेन को दंड के रूप में मृत्यु नहीं अपितु जीवन–दान देकर अपने विशाल हृदय का परिचय देता है। इस चलचित्र में मुख्य कहानी के साथ यह भी प्रदर्शित किया गया है कि बैजू बावरा तथा उसके बचपन की दोस्त गौरी एक–दूसरे के साथ प्रेम–संबंध में रहते हैं।[3]

संगीत

बैजू बावरा चलचित्र का संगीत ''नौशाद'' जी द्वारा प्रस्तुत किया गया है। इस चलचित्र की कहानी प्रमुख रूप से दो प्रसिद्ध संगीतकारों के जीवन पर आधारित होने के कारण इसका संपूर्ण संगीत, शास्त्रीय संगीत पर आश्रित है। यह चलचित्र संगीत निर्देशन के तौर पर हिन्दी सिनेमा जगत का अब तक का सबसे अच्छा चलचित्र माना जाता है। इस चलचित्र में नौशाद जी ने शास्त्रीय संगीत के प्रख्यात गायकों–उस्ताद अमीर खाँ तथा पं. डी.वी.

प्लुष्कर जी के गायन को प्रदर्शित किया है। इस चलचित्र के लगभग सभी गीतों को रागों में गायन किया गया है। इन सभी गीतों के रचयिता शकील बदायूंनी जी हैं।4 इस चलचित्र के अन्य गायकों के रूप में मुहम्मद रफ़ी, लता मंगेशकर, शमशाद बेग़म इत्यादि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

गीत–सूची

बैजू बावरा चलचित्र के गीतों की सूची इस प्रकार है–5

1. तोरी जय–जय करतार
2. सरगम (राग दरबारी कान्हड़ा)
3. तुमरे गुण गाऊँ
4. आज गावत मन मेरो झूम के
5. मन तरपत हरी दर्शन को आज
6. ओ दुनिया के रखवाले
7. मोहे भूल गए सांवरिया
8. बचपन की मुहब्बत को
9. इंसान बनो
10. तू गंगा की मौज
11. दूर कोई गाए
12. झूले में पवन के

प्रस्तुत गीतों का विस्तारपूर्वक वर्णन आगे किया जा रहा है–

1. तोरी जय–जय करतार

इस गीत को उस्ताद अमीर खां जी द्वारा राग पूरिया धनाश्री–एक ताल के अन्तर्गत एक बंदिश के रूप में गायन किया गया है। इसके बोल इस प्रकार हैं–

तोरी जय–जय करतार, मोरी भर दे आज झोलियाँ

तू रहीम दाता, तू पाक कीरतिकार।

तानसेन को तू रब, ज्ञान ध्यान दीजो सब

राग रंग सागर है, कर दे नईया पर।

प्रस्तुत गीत में प्रभु–परमेश्वर की स्तुति की गई है। उसे विभिन्न नामों के अन्तर्गत संबोधित किया गया हैः–जैसे–करतार, रहीम, पाक, कीरतिकार, रब इत्यादि। इस प्रकार इस गीत को एक भक्ति परक रचना कहा जाएगा।

इससे भक्ति भाव एवं रस की उत्पत्ति होती है।

2. सरगम

प्रस्तुत गीत पूर्ण रूप से राग आधारित है। इसे भी उस्ताद अमीर खां जी द्वारा गायन किया गया है। इस सरगम को राग दरबारी कान्हड़ा के आलाप के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसमें काव्य शब्दों के रूप में केवल राग दरबारी कान्हड़ा के स्वरों का ही सुन्दर प्रयोग किया गया है जैसे–स रे ग म रे स, म प ध ध नी रें सं इत्यादि। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि इस गीत में केवल राग दरबारी कान्हड़ा से उत्पन्न भाव या रस को ही नामांकित किया जा सकता है। राग दरबारी कान्हड़ा एक गंभीर प्रकृति का राग है जिससे संभवतः शांत रस की उत्पत्ति संभव है।

3. तुमरे गुण गाऊँ

प्रस्तुत गीत को उस्ताद अमीर खां तथा पं. डी.वी. प्लुष्कर जी द्वारा राग देसी–विलंबित एकताल की बंदिश के रूप में गायन किया गया है। इसके बोल इस प्रकार हैं–

तुमरे गुण गाऊँ रे

बिगरी बना दो दाता हमरे।

इस गीत में भी प्रभु का गुणगान किया गया है जो कि भक्ति रस से ओत–प्रोत है। इस प्रकार इस गीत से भी भक्ति रस की उत्पत्ति होती है।

4. आज गावत मन मेरो झूम के

इस गीत को भी उस्ताद अमीर खां तथा पं. डी. वी. प्लुष्कर जी द्वारा राग देसी–तीनताल की एक बंदिश के रूप में गायन किया गया है। इस गीत के बोल इस प्रकार हैं–

आज गावत मन मेरो झूम के, तेरी तान भगवान
हार गया तो जीवन जावे, जीता गायक दुनिया पावे
रखिओ अब मोरी शान रे।
प्रेम के कारण प्रेमी गावे, तानों से पाथर पिघलावे।
जगत में रहे मान रे।
सात सुरों के मधुर मिलन में, जादू आज जगा दें
बैजू के संगीत विधाता, जल में आग लगा दें।

प्रस्तुत गीत के शब्दों से स्पष्ट है कि इस गीत में प्रभु की स्तुति के साथ प्रभु

से किसी विशेष कामना के लिए प्रार्थना भी की गई है। इस प्रकार इस गीत से गंभीर, अद्‌भुत तथा शांत रस की उत्पत्ति होती है।

5. मन तरपत हरी दर्शन को आज

प्रस्तुत गीत को प्रसिद्ध चलचित्र गायक मुहम्मद रफ़ी द्वारा राग मालकौंस–तीनताल के अन्तर्गत एक भजन के रूप में गायन किया गया है। इसके बोल इस प्रकार हैं–

मन तरपत हरी दर्शन को आज
मोरे तुम बिन बिगरे सगरे काज
बिनती करत हूं रखिओ लाज
मन तरपत ....
तुमरे द्वार का मैं हूँ जोगी
हमरी ओर नजर कब होगी
सुनो मोरे व्याकुल मन का बाज
तरपत हरी दर्शन ....
बिन गुरु ज्ञान कहाँ से पाऊँ
दीजो दान हरी गुन गाऊँ
सब गुणीजन पे तुमरा राज
तरपत हरी दर्शन ....

प्रस्तुत गीत में प्रभु की स्तुति की गई है तथा प्रभु के दर्शन की अभिलाषा की गई है। इस प्रकार इससे भक्ति तथा शांत रस की उत्पत्ति संभव है।

6. ओ दुनिया के रखवाले

प्रस्तुत गीत को मुहम्मद रफ़ी द्वारा राग दरबारी कान्हड़ा–कहरवा ताल के अन्तर्गत गायन किया गया है। इसके बोल इस प्रकार हैं–

ओ दुनिया के रखवाले सुन दर्द भरे मेरे नाले।
आस निराश के दो रंगों से दुनिया तूने सजाई
नईया संग तूफान बनाया मिलन के साथ जुदाई
जा देख लिया हरजाई लुट गई मेरे प्यार की नगरी
अब तो नीर बहाले

आग बनी सावन की बरसात फूल बने अंगारे
नागन बन गई रात सुहानी पत्थर बन गए तारे

सब टूट चुके हैं सहारे जीवन अपना वापस ले ले
जीवन देने वाले
चाँद को ढूंढे पागल सूरज शाम को ढूंढे सवेरा
मैं भी ढूंढूं उस प्रीतम को हो ना सका जो मेरा
भगवान भला हो तेरा किस्मत फूटी आस न टूटी
पाँव में पड़ गए छाले
महल उदास और गलियाँ सूनी चुप–चुप हैं दीवारें
दिल क्या उजड़ा दुनिया उजड़ी रूठ गई हैं बहारें
हम जीवन कैसे गुजारें मन्दिर गिरता फिर बन जाता
दिल को कौन संभाले

इस गीत में प्रभु के एक भक्त द्वारा प्रार्थना की गई है तथा अपनी परिस्थिति का वर्णन किया गया है। इस प्रकार इस गीत में भक्ति के साथ–साथ करूण रस की उत्पत्ति होती है।

7. मोहे भूल गए सांवरिया

प्रस्तुत गीत को सुप्रसिद्ध गायिका लता मंगेशकर जी द्वारा राग भैरव–कहरवा ताल के अन्तर्गत गायन किया गया है। इस गीत के बोल प्रकार हैं–

जो मैं ऐसा जानती, कि प्रीत किए दुःख होए
नगर ढिंढोरा पीटती, कि प्रीत ना करिओ कोई।
मोहे भूल गए सांवरिया,
आवन कह गए अजहूं न आए
लीनी न मोरी खबरिया।
दिल को दिए क्यूं दुःख बिरहो के, तोड़ दिया क्यूं महल बना के
आस दिला के ओ बेदर्दी, फेर ली काहे नजरिया।
नैन कहें रो–रो के सजना, देख चुके हम प्यार का सपना
प्रीत है झूठी प्रीतम झूठा, झूठी है सारी नगरिया।

प्रस्तुत गीत में नायिका द्वारा अपने प्रियतम को करूण भाव से याद किया जा रहा है। नायिका अपनी करूणामयी स्थिति का वर्णन भी गीत के शब्दों द्वारा प्रस्तुत करती है। अतः इस गीत द्वारा करूण रस की उत्पत्ति होती है।

8. बचपन की मुहब्बत को

इस गीत को भी सुश्री लता मंगेशकर जी द्वारा राग मांड/ आसा–कहरवा ताल के अन्तर्गत गायन किया गया है। इस गीत के बोल इस प्रकार हैं–

बचपन की मुहब्बत को दिल से न जुदा करना
जब याद मेरी आए मिलने की दुआ करना।
बचपन की मुहब्बत...........................
घर मेरे उम्मीदों को उड़ा के जाते हो
दुनिया ही मुहब्बत की लूटे लिए जाते हो
जो गम दिए जाते हो उस गम की दवा करना।
बचपन की मुहब्बत...........................
सावन में पपीहे का संगीत चुराऊंगी
फरियाद तुम्हें अपनी गा–गा के सुनाऊंगी
आवाज मेरी सुन के दिल थाम लिया करना।
बचपन की मुहब्बत...........................

प्रस्तुत गीत में नायिका अपने बचपन के प्रेम को नायक द्वारा न भूलने के लिए गुहार लगाती है। गीत के शब्दों में करुण भाव प्रत्यक्ष रूप से प्रकट होता है। अतः इस गीत द्वारा करूण रस की उत्पत्ति होती है।

9. इंसान बनो

इस गीत को मुहम्मद रफ़ी जी द्वारा राग गुर्जरी तोड़ी–खेमटा ताल के अन्तर्गत गायन किया गया है जिसके बोल इस प्रकार हैं–

निर्धन का घर लूटने वालो, लूट लो दिल का प्यार
प्यार वो धन है जिसके आगे सब धन हैं बेकार।
इंसान बनो कर लो भलाई का कोई काम
इस बाग में सूरज भी निकलता है लिए ग़म
फूलों की हंसी देखके रो देती है शबनम
कुछ देर की खुशियाँ हैं तो कुछ देर का मातम
किस नींद में हो जागो जरा सोच लो अंजाम
लाखों यहां शान अपनी दिखाते हुए आए
दम भर के लिए नाच गए धूप में साए

वो भूल गए थे कि ये दुनिया है सराए
आता है कोई सुबह तो जाता है कोई शाम
क्यूं तुमने लगाए हैं यहाँ जुल्म के डेरे
धन साथ न जाएगा बने क्यूं हो लुटेरे
पीते हो गरीबों का लहू शाम सवेरे
खुद पाप करो नाम हो शैतान का बदनाम

प्रस्तुत गीत द्वारा कवि ने दुखियों तथा गरीबों पर पाप करने वाले इंसानों को जुल्म न करने की नसीहत दी है। अतः इसके द्वारा अद्भुत रस की उत्पत्ति संभव है।

10. तू गंगा की मौज

प्रस्तुत गीत को मुहम्मद रफ़ी तथा लता मंगेशकर जी द्वारा राग भैरवी–खेमटा ताल के अन्तर्गत गायन किया गया है। इसके बोल इस प्रकार हैं–

अकेली मत जईयो राधे जमुना के तीर।
तू गंगा की मौज मैं जमुना का धारा
हो रहेगा मिलन ये हमारा तुम्हारा
अगर तू सागर है तो मंझधार मैं हूँ
तेरे दिल की कश्ती का पतवार मैं हूँ
चलेगी अकेले न तुमसे ये नईया
मिलेगी न मंजिल तुम्हें बिन खेवईया
चले आओ मौजों का लेकर सहारा
हो रहेगा मिलन ये हमारा तुम्हारा
भला कैसे टूटेंगे बंधन ये दिल के
बिछड़ती नहीं मौज से मौज मिल के
छुपोगे भँवर में तो छुपने न देंगे
डुबो देंगे नईया तुम्हें ढूंढ लेंगे
बनायेंगे हम तूफां को इक दिन किनारा
हो रहेगा मिलन ये हमारा तुम्हारा

इस गीत में नायक ने नायिका के प्रति प्रेम संबंधों को विभिन्न उदाहरणों

द्वारा प्रकट करने का प्रयास किया है। गीत को राग भैरवी में गायन किया गया है जो कि करूण व श्रृंगार रस से ओत–प्रोत राग है। अतः इस गीत द्वारा करूण एवं श्रृंगार रस की उत्पत्ति होती है।

11. दूर कोई गाए

प्रस्तुत गीत को लता मंगेशकर, शमशाद बेगम तथा मुहम्मद रफ़ी जी ने राग देस–कहरवा ताल में गायन किया है। इस गीत के बोल इस प्रकार हैं–

दूर कोई गाए धुन ये सुनाए
तेरे बिन छलिया रे, बाजे ना मुरलिया रे
मन के अंदर प्यार की अग्नि
नैना खोए–खोए कि अरे रामा नैना खोए–खोए
अभी से है ये हाल तो आगे ना जाने क्या होए
नींद नहीं आए बिरहा सताए
तेरे बिना छलिया रे, बाजे ना मुरलिया रे
मोरे अंगना लाज का पहरा
पांव पड़ी जंजीर कि अरे रामा पांव पड़ी जंजीर
याद किसी की जब–जब आए लागे जिया पे तीर
आँख भर आए जल बरसाए
तेरे बिना छलिया रे, बाजे ना मुरलिया रे

इस गीत में नायिका द्वारा अपने नायक को याद करने का वर्णन किया है जिसमें वैराग्य तथा श्रृंगारिक रूप प्रकट होता है। अतः इस गीत द्वारा श्रृंगार तथा करूण रस की उत्पत्ति होती है।

12. झूले में पवन के आई बहार

इस गीत को लता मंगेशकर तथा मुहम्मद रफ़ी जी ने राग पीलू–कहरवा ताल के अन्तर्गत गायन किया है जिसके बोल इस प्रकार हैं–

झूले में पवन के आई बहार
नैनों में नया रंग लाई बहार
प्यार छलके हो प्यार छलके
डोले मन मोरा सजना
चुनरिया बार–बार ढलके

मेरी तान से ऊँचा तेरा झूलना गोरी
मेरे झूलने के संग तेरे प्यार की डोरी
तू है जीवन सिंगार प्यार छलके
बादल झूमते आए गागर प्यार की लाए
कोयल कूकती जाए बन में मोर भी गाए
छेड़ें हम–तुम मल्हार प्यार छलके

इस गीत में कवि ने नायक–नायिका के प्रेम संबंधों का प्रकृति के विभिन्न तत्त्वों, जीवों के अनुरूप वर्णन किया हैं। इस प्रकार इस गीत द्वारा शृंगार व अद्भुत रस की उत्पत्ति होती है।

निष्कर्ष

बैजूबावरा चलचित्र में प्रसिद्ध संगीतकार बैजूबावरा के जीवन का वर्णन किया गया है। बैजूबावरा किन परिस्थितियों में एक संगीतकार बना, उसने किस प्रकार अपनी संगीत विद्या के बल पर संगीत सम्राट तानसेन को हराया, उसी दौरान वह प्रेम संबंध में भी बंधा, इन सभी व्याख्यानों का वर्णन इस चलचित्र में किया गया है। एक संगीतकार के जीवन पर आधारित होने के कारण इस चलचित्र का सम्पूर्ण संगीत, शास्त्रीय संगीत पर आश्रित है। नौशाद जी ने इस चलचित्र का संगीत बहुत अच्छे ढंग के साथ श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत किया है। संगीत के लगभग सभी पहलूओं जैसे–शास्त्रीय, सुगम तथा लोक इत्यादि विधाओं का इस चलचित्र में बहुत सुन्दर दर्शन प्रतीत होता है। प्रस्तुत शोध–पत्र द्वारा इन सभी बिन्दुओं का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। अतः हम देखते हैं कि ''बैजूबावरा'' हिन्दी चलचित्र जगत की कला का एक विशेष उदाहरण है जिसको पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना अत्यंत आवश्यक कार्य है।

संदर्भ :

1. https://hi.m.wikipedia.org/wiki/बैजूऋबावराऋ;1952(फ़िल्म)
2. वही।
3. वही।
4. वही।
5. डॉ. विमल, हिन्दी चित्रपट एवं संगीत का इतिहास, पृष्ठ–71, प्रकाशकः सोमनाथ ढल संजय प्रकाशन, नई दिल्ली : 110002